विश्व में कोरिया

THE ACADEMY OF KOREAN STUDIES

विषय-वस्तु

1. परिचय

2. इतिहास

3. आर्थिक विकास

4. लोकतंत्र को अंगीकार करना

5. विश्व मंच पर दक्षिण कोरिया

1. परिचय

कोरिया गणराज्य (दक्षिण कोरिया) कोरियाई प्रायद्वीप के दक्षिणी आधे हिस्से पर स्थित है। इसके पश्चिमी नीले समुद्र के पार चीन है। पूर्व से पूर्वी समुद्र तक जापान है। लोकतांत्रिक जानवादी कोरिया गणराज्य (उत्तर कोरिया) प्रायद्वीप के उत्तरी आधे हिस्से में स्थित है।

सामान्य

- आधिकारिक नाम: कोरिया गणराज्य
- अवस्थिति: 38°N और 33°N अक्षांश और 126°E देशांतर
- क्षेत्रफल: 100,266 वर्गकिलोमीटर (2013)
- राजधानी: सियोल (9,926,000) (2013)
- जनसंख्या: 50,220,000(2013)
- जनसंख्या घनत्व: 501 व्यक्ति/वर्ग किमी (2013)
- भाषा: कोरियाई (लेखन प्रणाली: हंगुल)
- धर्म: बौद्ध (22.8%), प्रोटेस्टेंट (18.3%), कैथोलिक (10.9%), अन्य (1.1%), असंबद्ध (46.9%)
- सरकार: राष्ट्रपति गणतंत्र
- औसत तापमान: -2.5℃ (जनवरी) से 25.4℃ (अगस्त)
- राष्ट्रीय ध्वज: *Taegeukgi*
- राष्ट्रीय पुष्प: *Mugunghwa* (शैरन का गुलाब)

अर्थशास्त्र

- GDP (सांकेतिक): US$ 1,417 बिलियन (2014)
- GDP प्रति व्यक्ति (सांकेतिक): US $28,101 (2014)
- GDP (PPP): US $1,779 बिलियन (2014)
- GDP प्रति व्यक्ति (PPP): US $35,277 (2014)
- GNI (सांकेतिक): US $1,366 बिलियन (2014)
- GNI प्रति व्यक्ति (सांकेतिक): US $27,090 (2014)
- GNI (PPP): US $1,746 बिलियन (2014)

- GNI प्रति व्यक्ति (PPP): US $33,620 (2014)
- निर्यात: US $ 573 बिलियन (2014)
- आयात: US $ 526 बिलियन (2014)
- Gini: 31.1 (2011)
- HDI (मानव विकास रिपोर्ट): 0.891 (15वां)(2013)
- प्रमुख औद्योगिक उत्पादन: अर्धचालक (सेमीकंडक्टर), ऑटोमोबाइल, जहाज निर्माण, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल दूरसंचार, स्टील
- मुद्रा: वोन (KRW, कोरियाई वोन गणराज्य) (US $1 = 1,060 वोन) (2014)

2. इतिहास

शुरुआती कोरिया

कोरयाई प्रायद्वीप में पुरातन पाषाण युग से मानवों का बसाव है। कांस्य युग आने तक, यहां आकर बसने वाले लोगों ने पहले आधिकारिक राज्य गोजोसियन (पुराने जोसियन) की स्थापना की थी। कोरयाई लोग आज भी गोजोसियन के संस्थापक को 'ग्रांडफादर डंगन' कहते हैं। प्राचीन किंवदंतियों के अनुसार, डंगन एक भालू और दिव्य राजा के बेटे ह्वांग का पुत्र था जो पृथ्वी के लोगों के साथ रहने के लिए स्वर्ग से आया था। गोजोसियन कोरयाई प्रायद्वीप के उत्तरी भाग और आज के मंचूरिया के एक बड़े भाग का शासक था। यह राज्य 108 ईसा पूर्व हान राजवंश द्वारा नष्ट किए जाने से पहले काफी लंबे समय तक फला-फूला।

कोरिया के तीन साम्राज्य

प्रायद्वीप पर आधिपत्य को लेकर पहली शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 7वीं शताब्दी तक तीन अलग-अलग साम्राज्य आपस में लड़ते रहे। उत्तर के गोगुरियो, दक्षिण पश्चिम के बैक्जे और दक्षिण पूर्व के सिला को अंतत: 676 ईस्वी में सिला के अंतर्गत एकीकृत कर दिया गया। सिला के अंतर्गत 10वीं शताब्दी की लंबी अवधि तक शांति बनी रही जब यह कमजोर हो गया और 935 ईस्वी में इसे गोरियो के नए साम्राज्य के सामने घुटने टेकने पर मजबूर होना पड़ा। एकीकृत सिला काल के दौरान कला और विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ, विशेषकर बौद्ध धर्म, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, कृषि और साहित्य के क्षेत्र में।

कोरिया का धर्म

बौद्ध धर्म सन 372 ईस्वी में चीन के रास्ते से कोरिया आया और यह तेजी से कोरयाई मानसिकता, संस्कृति और आध्यात्मिक जीवन में व्याप्त हो गया। बौध तीन साम्राज्यों के काल से लेकर गोरियो के साम्राज्य तक राष्ट्रीय धर्म था। बाद में जोसियन राजवंश (1392-1910) ने कन्फ्यूशीवाद को अपने शासी दर्शन के रूप में अपना लिया।

प्रायद्वीप में कैथोलिक धर्म की शुरुआत 18वीं सदी के अंत में और प्रोटेस्टेंट की शुरुआत 19वीं सदी के अंत में हुई। शुरु में प्राधिकरणों ने ईसाइयत को दबाने का प्रयास किया, लेकिन 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के शुरु में इसके सदस्यों में इसमें आस्था रखने

वाले लोगों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी होती रही। आज लगभग 30 प्रतिशत कोरयाई अपने को ईसाई मानते हैं। इसके बावजूद, आधुनिक कोरिया में बौद्ध धर्म लोकप्रिय है और कन्फ्यूशीवाद आज भी सामाजिक मानकों को बेहद प्रभावित करता है, विशेषकर कोरयाई कार्यनीति को। दक्षिण कोरिया में इस्लाम सहित अन्य अनेक धर्मों में लोगों की स्वतंत्र रूप से आस्था है।

गोरियो और जोसियन

< गोरियो >

गोरियो साम्राज्य सन 935 ईस्वी में सिला पर आधिपत्य जमाने के बाद सत्ता में आया। गोरियो ने अपने राष्ट्रीय धर्म के रूप में बौद्ध धर्म को अपनाया और इस अवधि में बौद्ध कला के कई उत्कृष्ट कार्य तैयार किए गए। साम्राज्य की एक खुली विदेश नीति भी थी। इस प्रकार, गोरियो साम्राज्य 'कोरिया' के नाम से विदेशियों के बीच जाना जाने लगा। गोरियो 14वीं सदी के अंत में जोसियन राजवंश के उदय होने तक लगभग 470 वर्ष तक चला।

त्रिपिटक कोरियाना

त्रिपिटक कोरियाना प्राचीन बौध धर्मग्रंथों का दुनिया का सर्वाधिक व्यापक संग्रह है। 81,258 लकड़ी के ब्लॉकों पर नक्काशी से किया गया यह व्यापक कार्य, 13वीं शताब्दी में गोरियो साम्राज्य के समय में पूरा किया गया था, यह आक्रमणकारी मंगोलों से सुरक्षा के लिए बुद्ध से प्रार्थाना करने का एक तरीका था। प्रत्येक ब्लॉक के दोनों ओर लगभग 320 चीनी अक्षर हैं। कुल मिलाकर, लगभग 52 मिलियन अक्षरों की बेहद सावधानी के साथ पूरी बारीकी से नक्काशी की गई। पूरे सेट में वस्तुत: कोई गलती नहीं है।

< जिक्जी (*Jikji*) >

जिक्जी (*Jikji*) कोरयाई बौद्ध दस्तावेज *Anthology of Great Buddhist Priests' Zen Teachings* का संक्षिप्त शीर्षक है, जिसे गोरियो राजवंश के अंतिम समय में 1377 में हवेंगडेओक मंदिर में मुद्रित किया गया। जिक्जी (*Jikji*) को दुनिया की सबसे

पुरानी उपलब्ध पुस्तक माना जाता है जिसे धातु के चल प्रकार से मुद्रित किया गया। इसे जोहानिस गुटेनबर्ग की विख्यात 42-पंक्ति की बाइबिल, जिसे 1450 के आसपास मुद्रित किया गया था, से 78 वर्ष पूर्व प्रकाशित किया गया। जिक्जी (*Jikji*) को इस समय नेशनल लाइब्रेरी ऑफ फ्रांस के Manuscrits Orientaux डिविजन में रखा गया है। यूनेस्को ने इसे 2001 में मैमोरी ऑफ द वर्ल्ड (MOW) प्रोग्राम में शामिल किया है।

< जोसियन >

जोसियन (Joseon) राजवंश की स्थापना सन 1392 में जनरल यी सियोंग-गी (Yi Seong-gye) द्वारा की गई थी, जिन्होंने राजधानी हानयांग (आधुनिक सियोल) की स्थापना की। यह साम्राज्य जापान द्वारा 1910 में कोरिया पर कब्जा किए जाने तक 518 वर्ष तक मौजूद रहा। जोसियन ने राज्य के औपचारिक सिद्धांत के रूप में कन्फ्यूशीवाद को अपनाया। समाज को व्यवहार और आचरण के तरीकों के अनुसार कड़े वर्गों में विभाजित किया गया था। कन्फ्यूशियस राज्य परीक्षाओं में प्रदर्शन के आधार पर अधिकारियों को नियुक्त किया जाता था। राजवंश की मध्य अवधि में, देश को जापान के दो आक्रमणों द्वारा तहस-नहस कर दिया गया था, उसके बाद मंचूरिया का आक्रमण हुआ। राजवंश के उत्तरार्द्ध में, कृषि तकनीकों में सुधार हुआ और वाणिज्यिक क्रिया-कलापों में बढ़ोतरी हुई। 18वीं शताब्दी में कुछ राजनैतिक स्थिरता स्थापित हुई। तथापि, राजवंश के बाद के काल में, कोरिया ने अनेक बाहरी चुनौतियों का सामना किया, जिनकी वजह से 20वीं शताब्दी के शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय शक्तियों में विनाशकारी संघर्ष हुआ।

हंगुल: कोरियाई वर्णमाला

किंग सेजोंग महान (r. 1418-1450) को कोरयाई इतिहास में सर्वाधिक महान सम्राट के रूप में सम्मानित किया जाता है। उन्होंने विद्वत्तापूर्ण अनुसंधान संगठन Jiphyeonjeon का पुनरुद्धार किया, जिसने 1443 में कोरयाई वर्णमाल हंगुल का सफलतापूर्वक आविषकार किया। इसके कारण कोरयाई लोग चीनी वर्णों का उपयोग करने की अपेक्षा ध्वन्यात्मक रूप से लिखने लगे। विद्वता क्षेत्र के लोग चीनी वर्णों का उपयोग करते रहे, अब काफी अधिक

साहित्य इस प्रकार से लिखा जा सकता है जिसे अधिकाधिक कोरयाई लोग समझ सकें। व्यंजनों और स्वरों को दर्शाने वाले चिन्ह अत्यधिक तर्कसंगत और संक्षिप्त हैं और केवल कुछ घंटों के अध्ययन के बाद आसानी से सीखे जा सकते हैं। इस तरह हंगुल दुनिया के लिखने की सबसे अधिक वैज्ञानिक प्रणालियों में से एक है।

ऐतिहासिक गांव: हाहोई और यांगडोंग

कोरिया के ऐतिहासिक रूप से सबसे अधिक प्रसिद्ध दो गांव हाहोई और यांगडोंग ने पिछली पांच शताब्दियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ठोस वंश जुड़ावों को संजोकर रखा है। प्राकृतिक पर्यावरण और उत्कृष्ट दर्शनीय सुंदरता में बसे इस गांव के लोगों ने कन्फ्यूशियस साहित्यिक परिवारों की सम्मानित जीवनशैली और परम्परा को सफलतापूर्वक बचा कर रखा है। ये देश के इतिहास और परम्परा के अथाह महत्व में लोकप्रिय रुचि को जगाने के स्रोत हैं। इन दो गांवों को वर्ष 2010 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।

प्रायद्वीप का विभाजन

< 1 मार्च का आंदोलन >

आधुनिक युग की शुरुआत कोरयाई प्रायद्वीप के लिए शकुन भरी नहीं रही। जापानी साम्राज्यवाद की पहली गड़गड़ाहट के दौरान, जापान ने 1910 में कोरिया को कब्जे में ले लिया, और कोरयाई लोगों को अपनी संप्रभुता को पुन: प्राप्त करने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा।

1 मार्च, 1919 को कोरिया के 33 प्रमुख नेताओं द्वारा हस्ताक्षरित कोरियाई स्वतंत्रता की घोषणा घोषित की गई। इससे जापानी कब्जे के विरुद्ध राष्ट्रीय असंतोष उपजा और देश में तथा विदेशों में राजनैतिक और सशस्त्र प्रतिरोध हुआ। चीन के संघाई शहर में कोरिया गणराज्य की अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।

< आजादी और युद्ध >

इस प्रायद्वीप को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अगस्त, 1945 में जापान के आत्मसमर्पण पर आजादी मिली। सोवियत और अमेरिकी सैनिकों द्वारा शेष बचे

जापानी सैनिकों को निशस्त्र करने के लिए की गई गई कार्रवाई के तत्काल बाद 38वीं समानान्तर पर प्रायद्वीप का विभाजन हो गया। संक्षेप में, कोरिया अब दो महाशक्तियों के बीच फंसा एक भूराजनैतिक पीड़ित था।

15 अगस्त, 1948 को प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग का कोरिया गणराज्य के रूप में पुनर्जन्म हुआ, लोकतांत्रिक सिद्धांतों और मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के साथ एक स्वतंत्र देश। संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षण में दक्षिण कोरयाई लोगों ने एक नेशनल असेम्बली का चुनाव किया। इस असेम्बली ने अमेरिका में पढ़े-लिखे और स्वतंत्रता आंदोलन के नेता डॉ. सिंगमन री (Dr. Syngman Rhee) को देश के पहले राष्ट्रपति के रूप में चुना।

इसी बीच, सोवियत के समर्थन से किम II- सुंग की अध्यक्षता में उत्तरी भाग में लोकतांत्रिक जनवादी कोरिया गणतंत्र की स्थापना की गई।

जैसाकि पूर्व में वर्गीकृत दस्तावेजों (क्लासिफाइड डॉक्यूमेंट) से पता चलता है, उत्तर कोरिया ने सोवियत संघ की मदद से 25 जून, 1950 को दक्षिण कोरिया पर आक्रमण किया। इससे कोरयाई युद्ध की शुरुआत हुई जो जल्द ही अंतरराष्ट्रीय संघर्ष के रूप में फैल गया।

तीन दिनों के भीतर सियोल उत्तरी कोरयाई सैनिकों के कब्जे में आ गया, अगस्त तक दक्षिणपूर्व के बंदरगाह शहर बुसान और उसके आसपास के क्षेत्रों को छोड़कर पूरे दक्षिण कोरिया पर उत्तर कोरियाई सेना का कब्जा हो गया।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद दक्षिण कोरिया की सहायता के लिए तुरंत सहमत हो गई और 21 से अधिक सदस्य देशों से सेना और चिकित्सा कार्मिक भेजे। जनरल डगलस मैकआर्थर की अब मशहूर द्विधा गति वाले इंचियोन में लैंडिंग के बाद दक्षिण कोरिया और अमेरिका समर्थित संयुक्त राष्ट्र सेना ने उत्तर कोरिया की सेना को चीन की सीमा तक धकेल दिया। सीमा पर पहुंचने के बाद चीन उत्तर कोरिया की मदद करने के लिए युद्ध में शामिल हो गया और दक्षिण कोरिया और संयुक्त राष्ट्र सेना को एक बार फिर दक्षिण की ओर धकेल दिया गया। 4 जनवरी, 1951 को सियोल एक बार फिर उत्तर कोरिया के कब्जे में आ गया।

दक्षिण कोरिया और संयुक्त राष्ट्र सेना, जोकि अधिकतर अमेरिकी बलों से बनी थी, ने

दोनों पक्षों को बहुत अधिक हानि की कीमत पर उत्तर कोरियाई और चीनी सेना को 38वीं समानान्तर रेखा तक वापिस धकेला। विनाशकारी जनहानि और सामाजिक उथल-पुथल के अलावा, प्रायद्वीप खण्डरों में तबदील हो गया। जापानी औपनिवेशिक युग के बचे हुए सभी शेष ढ़ांचों को बड़े पैमाने पर नष्ट कर दिया गया था।

भातृवध युद्ध जुलाई 1953 में हुए युद्धविराम समझौते के साथ समाप्त हुआ। शांति समझौता होना अभी भी बाकी है।

युद्ध से पहले, संयुक्त राज्य और पूववर्ती सोवियन संघ ने 38वीं समानान्तर के साथ-साथ एक सीमा निर्धारित कर दी थी। युद्ध के बाद, पहली सीमा के पास एक नई सीमा तैयार कर दी गई, जिसे मिलिट्री डिक्लेरेशन लाइन (MDL) कहा जाता है। इसके आसपास 4 किलोमीटर चौड़ा सेना रहित क्षेत्र (DMZ) है, जो भारी हथियारों से लैस दो कोरियाओं की सीमा के बीच बफर जोन का कार्य करता है। कोरिया गणराज्य की मौजूदा जनसंख्या लगभग 50 मिलियन है, जबकि लोकतांत्रिक जनवादी कोरिया गणराज्य की जनसंख्या लगभग 25 मिलियन है।

3. आर्थिक विकास

वर्ष 1961 से 1979 तक राष्ट्रपति रहे पार्क चुंग-ही (Park Chung-hee) के नेतृत्व में, दक्षिण कोरिया ने आर्थिक विकास करने के लिए राज्य के नेतृत्व वाली निर्यातोन्मुखी नीति को अपनाया। राष्ट्रपति पार्क को आर्थिक बदलाव लाने के अग्रदूत का श्रेय दिया जाता है, इस बदलाव को 'हान नदी पर चमत्कार' कहा जाता है। आर्थिक विकास प्रेरित करने के लिए उसकी पंच-वर्षीय योजना ने बड़ी कार्पोरेट फर्मों को सहायता दी, रोजगार को बढ़ावा देने पर बल दिया और दक्षिण कोरिया की प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया।

दक्षिण कोरिया की आर्थिक विकास की अभूतपूर्व दर 1960 के दशक में शुरू हुई जब सरकार की नीति आयात प्रतिस्थापन औद्योगिकरण (ISI) से बदलकर निर्यात पर केन्द्रित हो गई। निर्यातोन्मुखी नीति के तहत, सरकार ने श्रम-गहन हल्के औद्योगिक उत्पादों को बढ़ावा दिया, जैसे वस्त्र और परिधान, जिसमें कोरिया को तुलनात्मक रूप से बढ़त हासिल थी।

1960 के दशक के अंत में और 1970 के दशक में केन्द्र एक बार फिर हल्के उद्योगों से उच्च मूल्य-संवर्धित भारी और रासायनिक उद्योगों पर शिफ्ट हो गया। लौह, इस्पात, अलौह धातु, जहाज निर्माण, इलेक्ट्रोनिक्स और रासायनिक उत्पादन को आर्थिक विकास की दौड़ में सबसे अधिक महत्वपूर्ण उद्योगों के रूप में चुना गया।

1981 में अनुसंधान और विकास (R&D) पर जोर दिया गया और प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के निर्यात में 1980 के दशक के अंत में बढ़ोतरी हुई। इस निर्यात आधारित नीति के अंतर्गत अनेक कंपनियां जिनमें सैमसंग, हुंडई और एलजी शामिल हैं, वैश्विक स्तर पर विकसित हुई, यह नीति 1990 के दशक की शुरुआत तक जारी रही। सरकार की सहायता से कोरयाई कंपनियों ने अधिक पूंजी की आवश्यकता वाले भारी और रसायन उद्योगों में निवेश करना शुरू किया, जबकि सरकार ने औद्योगिक और सामाजिक ढ़ांचे पर ध्यान केन्द्रित करना जारी रखा।

ग्रामीण जनसंख्या संगठित करने और कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए 1970 में सैम्युअल (Saemaul) आंदोलन की शुरुआत हुई। सैम्युअल का तात्पर्य है "नया गांव"। इस अभियान ने ग्रामीण गांवों के विकास में और किसानों की जीवन दशाओं में सुधार करने में मदद की। बाद में औद्योगिक संयंत्रों और शहरी क्षेत्रों की सहायता के लिए

इसका विस्तार किया गया। उसके बाद से सैम्युअल आंदोलन के सिद्धांतों को अन्य देशों द्वारा भी अपनाया गया है और दक्षिण कोरिया उनके साथ अपने ज्ञान और विशेषज्ञता को साझा कर रहा है।

दक्षिण कोरिया की राज्य आधारित निर्यातोन्मुखी आर्थिक विकास रणनीति व्यापक तौर पर सफल रही है। असल में, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से दक्षिण कोरिया ही एकमात्र ऐसा देश है जो एक ही पीढ़ी में विदेश सहायता प्राप्त करने वाले देश से बदलकर विदेशी सहायता दान करने वाले देश में बदल गया है। वर्ष 2014 में दक्षिण कोरिया विश्व में पांचवां सबसे बड़ा निर्यातक और सातवां सबसे बड़ा आयातक देश था।

दक्षिण कोरिया के आर्थिक विकास को किन कारकों ने प्रभावित किया?

दक्षिण कोरिया ने मजबूत नेताओं, अच्छी तरह से प्रशिक्षित ब्यूरोक्रेटों, आक्रामक औद्योगिकरण और प्रेरित श्रम बल से आश्चर्यजनक आर्थिक विकास हासिल किया। महत्वाकांक्षी उद्यमी ने निर्यात को बढ़ाने और नए उद्योगों को विकसित करने में सरकारी पहलों के प्रति सही प्रतिक्रिया दी।

दक्षिण कोरिया की कन्फ्यूशीवाद धरोहर शिक्षा, सामंजस्यपूर्ण व्यक्तिगत संबंधों और माता-पिता और पूर्वजों के प्रति संतान संबंधी दायित्वों पर बहुत अधिक जोर देती है। दक्षिण कोरिया के औद्योगिकरण की शुरुआत में लगभग सभी कोरियाई मजदूर साक्षर थे और नए कौशलों को आसानी से सीख सकते थे।

साथ ही देश की खुली आर्थिक नीति ने अन्य देशों के अपेक्षाकृत अधिक उन्नत संस्थानों और प्रौद्योगिकीयों को अवशोषित करने का कार्य किया। विदेशी निवेश और दक्षिण कोरिया की उच्च घरेलू बचत ने भारी उद्योग क्षेत्र के विकास में मदद की, जबकि विदेशों में रह रहे दक्षिण कोरियाई श्रमिकों द्वारा देश में भेजे गए धन से भी समग्र आर्थिक विकास में योगदान मिला। उदाहरण के लिए, 1960 के दशक के मध्य से लेकर 1970 के दशक के अंत तक दक्षिण कोरियाई खनिकों और नर्सों को काम करने के लिए जर्मनी भेजा गया।

4. लोकतंत्र को अंगीकार करना

स्वतंत्र और लोकतांत्रिक शासन के लिए दक्षिण कोरियाई लोग लड़ाई के अग्रिम मोर्चे पर थे। 1960 के दशक से देश का शासन राष्ट्रपति पार्क चुंग-ही के हाथों में था और उसके बाद पूर्व फौजी जनरलों के हाथों में रहा। 1993 तक, सफल और स्वतंत्र चुनावों के बाद दक्षिण कोरिया में एक सिविलियन नेतृत्व स्थापित हो चुका था।

अब दक्षिण कोरिया के समाचार पत्र और टेलीविजन स्टेशन मुकदमे के डर के बिना विभिन्न मतों को प्रकाशित और प्रसारित कर सकते हैं। इंटरनेट और सोशल नेटवर्क हर जगह व्याप्त है। इंस्टेंट मैसेजिंग और संचार लगभग प्रत्येक दक्षिण कोरियाई, विशेषकर युवाओं की उंगलियों पर है।

अर्थव्यवस्था विकास के बहाने लोकतंत्र दबाने की अवधि के दौरान मजबूत दक्षिण कोरियाई अर्थव्यवस्था का निर्माण हुआ था। इसी विकास ने बाद में उन्नतिशील लोकतंत्र के क्रमिक परिवर्तन में मदद दी और आज दक्षिण कोरियाई लोग लोकतंत्र में जी रहे हैं। तथापि, तीव्र आर्थिक विकास ने सामाजिक और आर्थिक असमानता को बढ़ावा दिया और जो लोग पीछे छूट गए उन्होंने और अधिक लोकतंत्रीकरण के लिए उत्प्रेरक का काम किया।

5. विश्व मंच पर दक्षिण कोरिया

दक्षिण कोरिया को सैकड़ों वर्षों तक 'साधु साम्राज्य' के नाम से जाना जाता था। तथापि, इस प्रायद्वीप पर व्यापार और आव्रजन कुछ स्तर तक हमेशा होता रहा है। सांस्कृतिक पुरावशेष और प्राचीन रिकार्ड हमें बताते हैं कि व्यापक स्तर पर अंतरसांस्कृतिक अदला-बदली हुई जिसमें चीन से जनजातियों का व्यापक प्रवास, अरबी व्यापारियों की बस्तियां और दक्षिणपूर्वी एशियाई लोगों का आगमन शामिल है। असल में प्रायद्वीप के दक्षिणपूर्वी किनारे पर ग्योजू (Gyeongju) की सिला राजधानी सिल्क रोड का सबसे पूर्वी छोर था, सिल्क रोड एक व्यापार मार्ग है जो एशिया महाद्वीप से होते हुए यूरोप तक जाता है।

हाल ही के समय में, दक्षिण कोरिया ने वैश्विक समुदाय भाग के रूप में अपना स्थान पक्का कर लिया है और दुनिया को भी कोरियाई लोगों, उत्पादों और संस्कृति का अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला है। उदाहरण के लिए एक औसत कोरियाई छात्र विदेशी समुदायों से जुड़ने के लिए अपने स्मार्टफोन पर काफी अधिक निर्भर रहता है, वह अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाएं सीखता है और दुनिया को देखने के सपने देखता है।

कई तरीकों से आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक संचार सिल्क रोड के समतुल्य है। जब इंटरनेट तक पहुंच की बात आती है तो दक्षिण कोरिया दुनियां के सबसे अधिक उन्नत देशों में से एक है। इसका सूचना राजमार्ग काफी विस्तृत और दूर तक जाता है। कोरियाई लोग ऐसे संचार चैनलों के माध्यम से दुनिया के नागरिकों के साथ अपने विचार, अनुभव साझा करते हैं, जो पीढ़ियों से गुजर चुकी समृद्ध कोरियाई संस्कृति में एक नई परत जोड़ता है।

पूरे इतिहास में, अंतरराष्ट्रीय संपर्क में सांस्कृतिक अदला-बदली हमेशा से एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है। यह आज तेजी से आपस में जुड़ रही दुनिया का भी सत्य है। दक्षिण कोरियाई पॉप संगीत (K-pop), मूवी और टेलीविजन ड्रामा के दुनियाभर में समर्पित दर्शक हैं क्योंकि Hallyu (कोरियाई लहर) ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है।

कोरिया की दैनिक जिंदगी

अधिकतर कोरियाई आधुनिक कपड़े पहनते हैं। पारंपरिक कोरियाई कपड़े, अथवा हानबोक (hanbok) विशेष अवसरों पर पहने जाते हैं, जैसे शादियों में, पारंपरिक अवकाशों के दौरान। hanbok में महिलाओं के लिए एक छोटी जैकेट और एक लंबी ड्रेस शामिल होती है और पुरुषों के लिए एक जैकेट और टखनों पर बंधी हुई ढीली पेंट होती है। विशिष्ट कोरियाई भोजन में चावल, सूप और किमछी (किण्वित गोभी) शामिल होती है और इसे चॉपस्टिक से खाया जाता है। कोरियाई लोग फर्श गर्म करने के लिए पारंपरिक सिस्टम का प्रयोग करते हैं जिसे ऑनडल (ondol) कहा जाता है, जिसे आज भी आधुनिक घरों में प्रयोग किया जाता है। अपार्टमेंट कॉम्पलेक्स कोरियाई लोगों के लिए सबसे विशिष्ट आवास विकल्प हैं क्योंकि शहरीकरण की कीमत बहुत अधिक ऊंची है। कोरिया की पारंपरिक मार्शल आर्ट ताइक्वांडो आज भी लोकप्रिय है और यह अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेले जाने वाला खेल है।

The Academy of Korean Studies
Center for International Affairs, Division of Understanding Korea Project

108º Research Complex(Munhyeonggwan), The Academy of Korean Studies, 323 Haogae-ro, Bundang-gu, Seongnam-si, Gyeonggi-do, 13455, Republic of Korea

- Tel. (82) 31-709-6590
- Fax. (82) 31-709-6572

http://www.ikorea.ac.kr/